ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 96-98
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

कामकाजी महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (पटना शहर के विशेष संदर्भ में)

चंद्रिका प्रसाद

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, (अवकाशप्राप्त) समाजशास्त्र विभाग, एम० एम० कालेज, विक्रम मगध विश्वविद्यालय, बोध गया (बिहार)

Received- 20.11.2018, Revised- 23.11.2018, Accepted - 26.12.2018 E-mail: - aaryvart2013@gmail.com

सारांश : ***दुनिया बहुत तेजी से बदल रही है यह बदलाव कई दिशाओं में हो रहा है। पढ़–लिख कर विकास की दौड़ में आ खड़ी हुई महिलाएँ अब घर की चारदीवारियों से निकल कर कामकाज की दुनिया में शामिल हो रही है। बदली हुई सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों में महिलाओं को शिक्षा आरै रोजगार के अवसर आसानी से मिलने लगे हैं जिस कारण उन्हें अभिव्यक्ति की आजादी मिली है, समाज में स्वयं अर्जित प्रतिष्ठा पाने के साधन मिले हैं और मिली है जीवन को अपने तरीके से जीने की आजादी। जैसे–जैसे महिलाएँ घरों से निकलकर कार्यस्थल तक पहुँच रही है, वैसे–वैसे उनकी दिक्कतें भी बढ़ रही है। भारत सहित विश्व के अधिकतर देशों में, घर एवं कार्यालय के बीच बँटी कामकाजी महिलाओं की स्थिति पर शोध हो रहे हैं।***

कुंजीभूत शब्द– वास्तविक उद्देश्य, सच्चे ध्येय, कर्तव्यों, हिन्दू धर्म, वास्तविक स्वरूप, विवाह,

भारत के संदर्भ में देखा जाय तो कामकाजी महिलाओं के प्रति समाज के नजरिए में रेखांकित करने योग्य बदलाव आया है। अभी 20 साल पहले तक ही छोटे नगरों में कामकाजी महिलाओं में उनकी किसी सामाजिक या आर्थिक मजबूरी ढूंढ़ी जाती थी और बेटे के विवाह के लिए प्रत्येक माँ–बाप एक 'घरेलू' लड़की की खोज में रहता था लेकिन आज स्थिति बिल्कुल उलट चुकी है। आज छोटे–छोटे कस्बों और यहाँ तक कि गाँवों में भी 'कामकाजी लड़की' विवाह योग्य लड़कों के माँ–बापों की पहली पसन्द बन गई है। लेकिन यह तस्वीर का सिर्फ एक रुख है। तस्वीर का दूसरा रुख बेहद स्याह है। कामकाजी महिलाओं को परिवार और पेशों के बीच सामंजस्य स्थापित करने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है क्योंकि समाज ने उनकी उपयोगिता और महत्व को तो स्वीकार कर लिया है, लेकिन कामकाजी महिलाओं को जिस पारिवारिक सहारे की जरूरत होती, उसमें आधी से ज्यादा कामकाजी महिलाएँ आज भी महरूम हैं। उच्च वर्ग की महिलाओं की स्थिति शायद कुछ अलग हो, लेकिन मध्यम वर्ग की अधिकांश कामकाजी महिलाओं को आज भी कार्यालय के बाद घर के कामकाज में जुट जाना पड़ता है। बात चाहे हम महानगरों की करें या छोटे कस्बों की, कामकाजी महिलाएँ आज भी घर में सबसे पहले उठती हैं और रात में सबसे बाद में उन्हें बिस्तर नसीब हो पाता है।

निम्न वर्ग की कामकाजी महिलाओं की स्थिति तो और भी खराब है। योजना आयोग के एक रिपोर्ट के अनुसार निम्न वर्ग की अधिकतर कामकाजी महिलाएँ अशिक्षित या अल्पशिक्षित होती है। काम करना इस वर्ग की महिलाओं के लिए एक मजबूरी ही है और मजबूरी में काम करने के लिए उन्हें कीमत भी चुकानी पड़ती है। कार्यस्थल पर उनके साथ दोयम दर्जे का व्यवहार किया जाता है। देर शाम जब घर लौटती है तो उसे दो–चार होना पड़ता है पारिवारिक हिंसा से कुछ लोगों को ये बात शायद अतीत की या किस्से कहानियों की ही लगे लेकिन 60 फीसदी भारत की यही सच्चाई है। काम में खटने के बाद घर पर पीटना, आज भी हकीकत है कस्बाई भारत की पिछले कुछ बर्षों में महिलाओं की जीवनशैली में महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिलते हैं। जिनसे उनके व्यवहार, मूल्य, संवेदनाओं तथा प्रेरणा शक्ति ही प्रभावित नहीं हुई है, बल्कि आज वे जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर भागीदारी कर रही है। सामाजिक परिवर्तन के घूमते चक्र के कारण ही महिलाओं की परम्परागत रूढ़िवादी भूमिका से काफी हद तक मिल गई है, हालांकि इस प्रक्रिया में विभिन्न कानूनी प्रावधानों ने भी सकारात्मक भूमिका निभाई है। अब महिलाएँ मात्र गृहिणी की ही भूमिका तक सीमित नहीं है बल्कि आधिपत्य, जवीबी और परिपक्व स्त्री के रूप में सहज देखी जा सकती है।

पिछले तीन दशकों में मध्य वर्ग की कामकाजी महिलाओं की संख्या में जबर्दस्त इजाफा हुआ है। द्वितीय महायुद्ध से पूर्व और उसके कुछ समय बाद एक भी मध्यवर्ग और उच्च वर्ग की स्त्रियाँ ज्यादातर अपने घरों की चहारदीवारी में ही सिमटी रहती थी। एक ओर तो कामकाजी महिलाओं का अनुपात बढ़ता जा रहा है तो दूसरी ओर बढ़ रहा है। कार्यस्थल पर उनके साथ होने वाला दुर्व्यवहार। अहमदाबाद वुमेंस एक्शन ग्रुप नामक एक गैर सरकारी स्वैच्छिक संस्था ने

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

सन् 2004 की शुरुआत में एक सर्वे किया। सर्वे से स्पष्ट हुआ कि कार्यस्थल पर महिलाओं का शोषण होता है। इस सर्वेक्षण के मुताबिक लगभग 48 फीसदी महिलाओं का कार्यस्थल पर मौखिक, शारीरिक और मानसिक शोषण का हमला झेलना पड़ता है और यह हमला करते हैं उनको अपने सहकर्मी।

अध्ययन का उद्देश्य–

(1) कामकाजी महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर प्रकाश ईलाज।

(2) कामकाजी महिलाओं के परिवारों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को ज्ञात करना।

(3) कामकाजी महिलाओं की परिवार में स्थिति का अध्ययन करना।

(4) कामकाजी महिलाओं के कार्य करने से उनके परिवार पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

(5) कामकाजी महिलाओं की समस्याओं की जानकारी प्राप्त करना।

(6) आय सृजन गतिविधियाॅं मे ं भाग लेने वाली महिलाओ ं की आर्थिक स्थिति की चर्चा करना।

परिकल्पना–

(1) कामकाजी महिलाओं की संख्या व्यवसायिक धनोपार्जन करने वाली कुछ कार्यशील जनसंख्या में विद्यमान है।

(2) कामकाजी महिलाओं की स्थिति में सतत् सुधार हो रहा है।

(3) निर्णय प्रक्रिया में बढ़ती भूमिका के साथ कामकाजी महिलाओं की कार्य संतुष्टि का स्तर भी बढ़ रहा है।

(4) कामकाजी महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन आने के कारण दोहरी भूमिका के प्रभाव में अन्तर्द्वन्द्व कम हो रहा है।

(5) सामाजिक आर्थिक परिवर्तन परिणामस्वरूप कामकाजी महिलाओं के समक्ष नवीन चुनौतियाँ उत्पन्न हो रहा है।

(6) कामकाजी होने के कारण उनके परिवारों की स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन हो रहे हैं।

साहित्य सर्वेक्षण– कामकाजी महिलाओं पर जो कुछ अध्ययन हुए हैं उसमें कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि आज पति, रिश्तेदार और पुरानी पीढ़ी के लोग भी अपनी शिक्षित बेटी, पत्नी और बहू का काम करना ठीक समझते हैं उसका बुरा नहीं मानते साथ ही उसे प्रोत्साहित करते हैं कि वे परिवार की आय में वृद्धि करके उसकी मदद करें! कपूर ने अपने अध्ययन में पाया है कि "आम काम करने वाली पत्नियों में 86 प्रतिशत के पति चाहते हैं कि उनकी पत्नियाँ काम करें।" जौहरी के अध्ययन में 76 प्रतिशत महिलाओं ने बतायी है कि उनके पति को उनका काम करना पसन्द था, क्योंकि उनके काम करने से परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। एक अध्ययन में यह पाया गया किकामकाजी महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

अध्ययन क्षेत्र– प्रस्तुत अध्ययन के लिए पटना शहर को चुन गया था। पटना एक प्राचीन नगर है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण एवं प्रविधि– प्रस्तुत शोध कार्य में प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्यों को विभिन्न सरकारी एवं स्थानीय कार्यालयों एवं इस दिशा में पूर्व किये गये शोध कार्यों आदि से संकलित किय गया है। प्राथमिक आँकड़ों के लिए पटना नगर नगम क्षेत्र से दैव निदर्शन के आधार पर 20 आँगनबाड़ी केन्द्रों में कार्यरत महिलाओं का 20 निजी विद्यालयों की शिक्षिकाओं का तथा 10 स्वयं के व्यवसाय में संलग्न महिलाओं का चयन किया गया है। इस प्रकार कुल 50 कामकाजी महलाओं का चयन किया गया है एवं उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित तथ्यों का संकलन एक व्यवस्थित साक्षात्कार–अनुसूची के द्वारा किया गया है। उपरोक्त दोनों विधियों से प्राप्त तथ्यों का सारणीय एवं वर्गीकरण करने क पश्चात् आवश्यक सांख्यिकीय उपकरणों के माध्यम से, परिकल्पनाओं के परीक्षण के पश्चात् परिणाम प्राप्त किये गये हैं।

प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण–

तालिका संख्या–1

क्या आप अपनी आय को इच्छानुसार व्यय नहीं करते हैं?

[illegible]	संख्या	प्रतिशत
पू कि सहमत	11	22
सहमत	14	28
असहमत	17	34
पू कि असहमत	08	16
योग	50	100

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र की 22 प्रतिशत कामकाजी महिलाएँ पू र्णतः सहमत एवं 28 प्रतिशत कामकाजी महिलाएँ इस तथ्य से सहमत हैं कि वह आज भी आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं है एवं 34 प्रतिशत कामकाजी महिलाएँ इस तथ्य से असहमत है।

तालिका संख्या–2

क्या आपको दोहरी भूमिका का सामना करना पड़ता ह?

भूमिका	संख्या	प्रतिशत
हाँ	48	96
नहीं	2	4
योग	50	100

PIF/3.007 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

तालिका 2 से स्पष्ट है कि 96 प्रतिशत कामकाजी महिलाओं को दोहरी भूमिका का साझा करना पड़ता है, जबकि 4 प्रतिशत कामकाजी महिलाओं को दोहरी भूमिका का सामना नहीं करना पड़ता है।

तालिका संख्या–3

क्या आप में थकान के कारण चिड़चिड़ापन उत्पन्न होता हैं?

अपेक्षा	संख्या	प्रतिशत
हैं	45	90
नहीं	5	10
योग	50	100

तालिका 3 से स्पष्ट है कि 90 प्रतिशत कामकाजी महिलाएँ थकान के कार। चिड़चिड़ेपन महसूस करती है जबकि 10 प्रतिशत कामकाजी महिलाएँ चिड़चिड़ेपन महसूस नहीं करती है।

तालिका संख्या–4

क्या आपको सम्पूर्ण विकास के अवसर प्राप्त होते हैं?

अपेक्षा	संख्या	प्रतिशत
हैं	6	12
नहीं	44	88
योग	50	100

तालिका 4 के तथ्यों से ज्ञात होता है कि 12 प्रतिशत कामकाजी महिलाओं को सम्पू र्ि विकास के अवसर प्राप्त होते है, जबकि 88 प्रतिशत कामकाजी महिलाओं को सम्पू र्ि विकास के अवसर प्राप्त नहीं होते हैं।

तालिका संख्या–5

क्या समाज की सोच में महिला विकास से सम्बन्धित परिवर्तन लाना एक चुनौतिपूर्ण कार्य हैं?

अपेक्षा	संख्या	प्रतिशत
हैं	37	74
नहीं	13	26
योग	50	100

तालिका 5 से ज्ञात होता है कि 7 प्रतिशत कामकाजी महिलाएँ स्वीकार करती है कि समाज की सोच में महिला विकास से सम्बन्धित परिवर्तन लाना एक चुनौतिपूर्ण कार्य है।

निष्कर्ष– निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि अर्जनकारी होने के कारण कामकाजी महिलाओं की पारिवारिक परिस्थिति में भी अन्तर आया है। उन्हें अपने मन से अपनी आय को व्यय करने का अधिकार तो प्राप्त होता ही है, पर वे अपने ही मन से संयुक्त रूप से व्यय करते ही हैं, इससे उनकी शक्ति संरचना में भी परिवर्तन होता है।

अध्ययन के क्रम में सार्वधिक 42.5 प्रतिशत कामकाजी महिलाएँ 30 से 40 वर्ष की पायी गयी है। सर्वाधिक कामकाजी महिलाएँ सामान्य जाति की है। अधिकांश कामकाजी महिलाएँ एकल परिवार का प्रतिनिधित्व करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कपूर प्रमिला (1974): दी चेंजिंग स्टटेस ऑफ दी वर्किंग वोमने डालस्ट्रोम, ई0 इन इंडिया, विकास प्रकाशन, न्यू दिल्ली।
2. (1967):द चेंजिंग रोल ऑफ मेन ए ड वोमेन, लन्दन।
3. देसाई, एन० (1957):वीमेन इन मार्डन इंडिया, बोरा कम्पनी, बम्बई।
4. देवी, यू० (1982):स्टेटस ए ड इम्पलायमटें ऑफ वामे ने इन इंडिया, बी०आर० पब्लिशिंग कॉरपोरेशन, दिल्ली।
5. नरूला आनन्द (1967):कैरियरकल्चर अमगं वेलफेयर।
6. वामेन, सोशल रानी, कला (1976):रोल कान्फलीक्ट इन वर्किंग वुमेन, दिल्ली।
7. वर्मा, एम० वारिस (1964):दी स्टडी ऑफ दी मिडल क्लास वर्किंग–वुमेन इन कानपुर, आकुरिंग इन यु ललिता देवीज, बुक स्टेट्स एण्ड इम्पलायमेंट ऑफ वीमेन इन इंडिया।
8. श्री निवास, एम०एन० (1966): सोशल चेंज माडर्न इण्डिया, युनिवर्सिटी ऑफ केलिफोर्निया प्रेस, वर्कले।
9. सिन्हा, पुष्पा (1987):रोल कान्फिलक्ट अमंग द वर्किंग वुमेन, पटना।
10. मजुमदार, वीणा (1975):स्टेटस ऑफ वुमेन इन इंडिया, डेमोग्राफी इण्डिया, वो0 नं०–2।

*****